श्री सुविधिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

जय-जय विदेही आप जिनवर, पुष्पदंत जिनेश्वरम्।
श्री सुविधिनाथ जिनेश जय-जय, जय भवोदधि तारणम्।।
मैं करूँ निर्मल भाव पूजन, ज्ञान सूर्य प्रकाशकम्।
मम आतमा में आ पधारो, हे मेरे परमेश्वरम्।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(आडिल्ल छंद)

जन्म जरा मृत्यु से मैं भयभीत हूँ।
काल अनंता से तृष्णा में लिप्त हूँ।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की तपन मिटाने वाला है चंदन।
भवाताप का नाश कराता जिन वंदन।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम शांत निराकुल अक्षय पद पाऊँ।
अक्षत चरण चढ़ा कर जिन पद गुण गाऊँ।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मार्दव गुण को आज पाने आया हूँ।
काम विकास विनाश करने आया हूँ।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छाओं की भूख मिटाने आया हूँ।
रत्नत्रय नैवेद्य पाने आया हूँ ।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर को आलोकित करने आ गया।
मोह महाबली नाश करने आ गया।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विचित्र आतम में छाये।

प्रभु शरण में आते ही सब नश जाये।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
सुविधिनाथ विधि अंत हमारे कीजिये।
सिद्धों जैसा सुख अनंत फल दीजिये ।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधु मन भा गया।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जग में सबका मूल्य, आप अनमोल हैं।
अनर्घ्य पद पाने को जिनवर ठोर हैं।।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया।
करुणासागर दयासिंधुमन भा गया।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पंचकल्याणक
(आडिल्ल छंद)
दिखलाते हैं प्रभु के महा प्रभाव को।
माँ ने देखे सोलह सपने रात को।।
फाल्गुन कृष्णा नवमी की यह बात थीं
मँ जयरामा के उत्सव की रात थी।।1।।
ऊँ हीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अंतिम जन्म ही लिया धरा पर नाथ ने।
नृप सुग्रीव के गृह काकंदी ग्राम में।।
मगसिर शुक्ला एकम को शुभ लग्न में।
मेरू पर अभिषेक हुआ सुर मग्न हैं।।2।।
ऊँ हीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मेघ विलय लख आ गये स्वामी वन में।
लिये पालकी देव सब आये क्षण में।।
जन्मोत्सव की शहनाई बदली तप में।
लौकांतिक सुर कहे धन्य जिनवर जग में।।3।।
ऊँ हीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन महिमा को गूँथ सके ना शब्द हैं।
नाश हो गई त्रेसठ प्रकृति कर्म हैं।।
कार्तिक शुक्ला दूज केवलज्ञान लिया।
झुका झुकाकर माथ सबने नमन किया।।4।।
ऊँ हीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मोक्ष निकट यह प्रभु आपने जान लिया।
मास पूर्व ही समवसरण का त्याग किया।।
सुप्रभ कूट से जिनवर ने मुक्ति पाई।
भाद्र शुक्ल अष्टम की शुभ बेला आई ।।5।।
ऊँ हीं भाद्रशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य
ऊँ हीं अर्हं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

मंगलमय श्री सुविधि जिनेश्वर, मंगलमय प्रभु की वाणी।
दुखी देख जग सर्व अंग से, खिरी प्रभु अंतर्वाणी।।
मकर चिह्न से चिह्नित पद है, मिले भाग्य से मुझको आज।
भव सिंधु से पार लगा दो, जिनवर अद्भुत परम जहाज।।1।।
प्रभु आपने समवसरण में, दश धर्मों का ज्ञान दिया।
नहीं सुनी मैंने जिनवाणी, राग-द्वेष का पान किया।।
धर्म नीर बिन जीवन तरुवर, मिथ्यानल से जला दिया।
मोक्ष तत्त्व का अर्थ न समझा, नंत काल यों बिता दिया।।2।।
पुण्योदय से आज प्रभु मैं, समवसरण में आया हूँ।
दिव्यध्वनि से दश धर्मो का, अमृत पीने आया हूँ।।
जहाँ क्षमा है वहाँ धर्म है, स्व-पर दया का मूल महान।
क्रोध कषाय नरक ले जाती, सब दुःखों की यही प्रधान।।3।।
मान कषाय सदा दुख देती, मार्दव मोक्ष नगर का द्वार।
स्रल भाव सिद्धों का साथी, उत्तम आर्जव है सुखकार।।
लोभ कषाय नाश कर देती, शौच धर्म करता कल्याण।
सत्य धर्म मय जो हो जाता, निश्चित पाता है निर्वाण।।4।।
धन्य-धन्य संयम की महिमा, तीर्थंकर भी अपनाते।
उत्तम तप जो धारण करते, निश्चित शिव पदवी पाते।।
अहो दान की महिमा न्यारी, तीर्थंकर भी लें आहार।
उत्तम त्याग धर्म की जय हो, स्वर्ग मोक्ष का है दातार।।5।।
सर्व परिग्रह त्याग आकिंचन, सिद्ध स्व पद का दाता है।
सब धर्मो में श्रेष्ठ धर्म है, ब्रह्मचर्य सुख दाता है।।
दिव्य वचन सुन लगा मुझेअब, भव सागर का अंत हुआ।
शरण आपकी जो भी आया, भक्ति से भगवंत हुआ।।6।।
प्रभु आपकी धर्म सभा में, अट्ठासी गणधर स्वामी।
श्रीघोषा थी प्रमुख आर्या, बुद्धिवीर्य श्रोता नामी।।
कर्म अंत करने को स्वामी, शरण आपकी आया हूँ।
पंच परावर्तन मिट जाये, यही आस ले आया हूँ।।7।।

सोरठा

नाथ निरंजन आप, पुष्पदंत जिनराज जी।
हो जाऊँ निष्पाप, कर्म नष्ट कर दो प्रभो ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री सुविधि जिनेशा, हे परमेशा, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।